टिप्पणी

2

लेखांकन अवधारणाएँ

पिछले पाठ में आपने व्यावसायिक लेन-देन का अर्थ एवं प्रकृति तथा लेखांकन के उद्देश्यों का अध्ययन किया। लेखा पुस्तकों को तैयार करने तथा उनके रखरखाव में समरूपता तथा अनुरूपता रखने के लिए कुछ नियम एवं सिद्धांत विकसित किये गये हैं। इन नियमों/सिद्धांतों को अवधारणाएँ एवं परिपाटियाँ वर्गों में बाँटा जा सकता है। लेखांकन अभिलेखों को तैयार करने एवं रखने के यह आधार है। इस पाठ में हम विभिन्न अवधारणाओं, उनके अर्थ एवं उनके महत्व को पढ़ेगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् आप

- लेखांकन अवधारणा के अर्थ को स्पष्ट कर सकेंगे;
- विभिन्न अवधारणाओं का अर्थ एवं उनके महत्व को स्पष्ट कर सकेंगे जैसे व्यावसायिक इकाई, मुद्रा माप, चालू व्यापार, लेखांकन अवधि, लागत अवधारणा, द्विपक्षीय अवधारणा, वसूली की अवधारणा, उपार्जन की अवधारणा, एवं मिलान अवधारणा।

2.1 अर्थ एवं व्यावसायिक इकाई अवधारणा

आइए एक उदाहरण लें। भारत में एक मूलभूत नियम है जिसे सभी को पालन करना होता है और वह है कि प्रत्येक व्यक्ति को सड़क पर अपने बाँई ओर चलना है अथवा अपने वाहन को चलाना है। इसी प्रकार से कुछ नियम हैं जिनका एक लेखाकार को व्यावसायिक लेने देनों के अभिलेखन एवं खातों को बनाते समय पालन करना होता है। इन्हें हम लेखांकन अवधारणाएँ कह सकते हैं। अतः हम कह सकते हैं :

टिप्पणी

लेखांकन अवधारणा से अभिप्राय उन मूलभूत परिकल्पनाओं एवं नियमों तथा सिद्धांतों से है जो व्यावसायिक लेने देनों एवं अभिलेखन एवं खाते तैयार करने का आधार होते हैं।

मुख्य उद्देश्य लेखांकन अभिलेखों में एकरूपता एवं समरूपता बनाए रखना है। यह अवधारणाएँ लेखांकन का आधार होती हैं। सभी अवधारणाओं को वर्षों के अनुभव से विकसित किया गया है, इसलिए यह सार्वभौमिक नियम हैं। नीचे विभिन्न लेखांकन अवधारणाएँ दी गई हैं जिनका आगे के अनुभागों में वर्णन किया गया है।

- व्यावसायिक इकाईं अवधारणा
- मुद्रा माप अवधारणा
- चालू व्यापार अवधारणा
- लेखांकन अवधि अवधारणा
- लेखांकन लागत अवधारणा
- द्विपक्षीय अवधारणा
- वसूली अवधारणा
- उपार्जन अवधारणा
- मिलान अवधारणा

2.2 व्यावसायिक इकाई अवधारणा

इस अवधारणा के अनुसार लेखांकन के लिए व्यावसायिक इकाई एवं इसका स्वामी दो पृथक स्वतन्त्र इकाइयाँ हैं। अतः व्यवसाय एवं इसके स्वामी के व्यक्तिगत लेन देन अलग-अलग होते हैं। उदाहरण के लिए जब भी स्वामी व्यवसाय में पूँजी लगाता है तो इसे व्यवसाय की स्वामी के प्रति देयता लिखा जाता है। इसी प्रकार से जब स्वामी व्यवसाय में से रोकड़/वस्तुओं को अपने निजी प्रयोग के लिए ले जाता हैं तो इसे व्यवसाय का व्यय नहीं माना जाता। अतः लेखांकन अभिलेखों को व्यावसायिक इकाई की दृष्टि से लेखांकन पुस्तकों में लिखा जाता है न कि उस व्यक्ति की दृष्टि से जो उस व्यवसाय का स्वामी है। यह अवधारणा लेखांकन का आधार है।

आइए एक उदाहरण लें। माना श्री साहू ने ₹ 1,00,000 की राशि लगाकर एक व्यवसाय प्रारम्भ किया है। उसने ₹ 40,000 का माल खरीदा, ₹ 20,000 का फर्नीचर खरीदा तथा ₹ 30,000 का यन्त्र एवं मशीनें खरीदी ₹ 10,000 उसके पास रोकड़ है। यह व्यवसाय की परिसंपत्तियाँ हैं न कि स्वामी की। व्यावसायिक इकाई की अवधारणा के अनुसार ₹ 1,00,000 की राशि व्यवसाय की पूँजी अर्थात् व्यवसाय पर स्वामी के प्रति देनदारी मानी जाएगी।

टिप्पणी

माना वह ₹ 5000 नकद तथा ₹ 5000 की वस्तुएँ अपने घर में प्रयोग के लिए ले जाता है। स्वामी द्वारा व्यवसाय में से रोकड़/माल को ले जाना उसका निजी व्यय है। यह व्यवसाय का व्यय नहीं है। इसे आहरण कहते हैं। इस प्रकार व्यावसायिक इकाई की अवधारणा यह कहती है कि व्यवसाय और उसका स्वामी परस्पर पृथक/भिन्न हैं। तदनुसार व्यवसाय के स्वामी द्वारा स्वयं पर अथवा अपने परिवार पर व्यवसाय में से किया गया कोई भी व्यय आहरण माना जाएगा।

महत्व

नीचे दिए गए बिन्दु व्यावसायिक इकाई की अवधारणा के महत्व पर प्रकाश डालते हैं :

- यह अवधारणा व्यवसाय के लाभ के निर्धारण में सहायक होती है क्योंकि व्यवसाय में केवल खर्चों एवं आगम का ही लेखा किया जाता है तथा सभी निजी एवं व्यक्तिगत खर्चों की अनदेखी की जाती है।
- यह अवधारणा लेखाकारों पर स्वामी के निजी/व्यक्तिगत लेन देनों के अभिलेखन पर रोक लगाती है।
- यह व्यवसाय की दृष्टि से व्यावसायिक लेन-देनों के लेखा करने एवं सूचना देने के कार्य को आसान बनाती है।
- यह लेखांकन अवधारणाओं, परिपाटियों एवं सिद्धान्तों के लिए आधार का कार्य करती है।

पाठगत प्रश्न 2.1

रिक्त स्थानों की उचित शब्द भरकर पूर्ति कीजिए :

i. लेखांकन अवधारणाएँ लेखांकन की आधारभूत.....हैं।

ii. लेखांकन अवधारणा का मुख्य उद्देश्य.....एवं लेखांकन अभिलेख में .....रखना है।

iii. .....अवधारणा में यह माना जाता है कि व्यावसायिक उद्यम एवं इसके स्वामी दो अलग–अलग स्वतन्त्र इकाई है।

iv. व्यवसाय में से स्वामी के निजी उपयोग के लिए वस्तुओं को ले जाना .....कहलाता है।

2.3 मुद्रा माप अवधारणा

मुद्रा माप अवधारणा के अनुसार व्यावसायिक लेन-देन मुद्रा में होने चाहिएँ अर्थात् देश की मुद्रा में। हमारे देश में यह लेन-देन रुपये में होते है।

टिप्पणी

इस प्रकार से मुद्रा माप अवधारणा के अनुसार जिन लेन-देनों को मुद्रा के रूप में दर्शाया जा सकता है उन्हीं का लेखा पुस्तकों में लेखांकन किया जाता है। उदाहरण के लिए ₹ 2,00,000 का माल बेचा, ₹ 1,00,000 का कच्चा माल खरीदा, ₹ 1,00,000 किराए के भुगतान आदि मुद्रा में व्यक्त किए गए हैं। अतः इन्हें लेखा पुस्तकों में लिखा जाएगा। लेकिन जिन लेन-देनों को मुद्रा में नहीं दर्शाया जा सकता उनका अभिलेखन लेखा पुस्तकों में नहीं किया जाता। उदाहरण के लिए कर्मचारियों की गम्भीरता, वफादारी, ईमानदारी को लेखा-पुस्तकों में नहीं लिखा जाता क्योंकि इन्हें मुद्रा में नहीं मापा जा सकता, जबकि इनका भी व्यवसाय के लाभ तथा हानि पर प्रभाव पड़ता है।

इस अवधारणा का एक पहलू यह भी है कि लेन-देनों का लेखा-जोखा **भौतिक** इकाइयों में नहीं बल्कि मुद्रा इकाइयों में रखा जाता है। उदाहरण के लिए माना 2013 के अंत में एक संगठन के पास 10 एकड़ जमीन पर एक कारखाना है, कार्यालय के लिए एक भवन है जिसमें 50 कमरे हैं 50 निजी कम्प्यूटर हैं, 50 कुर्सियाँ तथा मेजे हैं तथा 100 कि.ग्रा. कच्चा माल है। यह सभी विभिन्न इकाइयों में दर्शाये गए हैं। लेकिन लेखांकन में इनका लेखा-जोखा मुद्रा के रूप में अर्थात् रुपयों में रखा जाता है। इस उदाहरण में कारखाने की भूमि की लागत ₹ 12 करोड, कार्यालय के भवन की ₹ 10 करोड, कम्प्यूटरों की ₹ 10 लाख, कार्यालय की कुर्सियों तथा मेजों की लागत ₹ 2 लाख तथा कच्चे माल की लागत ₹ 30 लाख है। इस प्रकार से संगठन की कुल परिसंपत्तियों का मूल्य 22 करोड़ 42 लाख रुपये है। इस प्रकार से लेखा पुस्तकों में केवल उन्हीं लेन-देनों का लेखांकन किया जाता है जिन्हें मुद्रा में दर्शाया जा सके वह भी केवल मुद्रा में न कि मात्रा में।

महत्व

मुद्रा माप अवधारणा के महत्व को नीचे दिए गए बिन्दुओं के द्वारा दर्शाया गया है :

- यह अवधारणा लेखाकारों का मार्गदर्शन करती है कि किसका लेखा किया जाए और किसका नहीं।
- यह व्यावसायिक लेन-देनों के अभिलेखन में एकरूपता लाने में सहायक होती है।
- सभी व्यावसायिक लेन-देनों को मुद्रा में दर्शाया जाता है इससे व्यावसायिक इकाई द्वारा बनाए गए खातों को समझना आसान होता है।
- इससे किसी भी फर्म के दो भिन्न अवधियों के और दो भिन्न फर्मों के एक ही अवधि के व्यावसायिक निष्पादन की तुलना करना सरल हो जाता है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 2.2

जिस सूचना को लेखा पुस्तकों में लिखा जाना चाहिए इसके आगे (√) का निशान लगाएँ और जिसके सूचना को नहीं लिखा जाना है उसे के आगे (×) का निशान लगाएँ।

i. प्रबन्ध निदेशक का स्वास्थ्य

ii. कारखाना भवन की ₹ 10 करोड़ की खरीद

iii. ₹ 10,0000 किराए का भुगतान

iv. ₹ 10,000 की वस्तु दान के रूप में दी गई

v. कच्चे माल की आपूर्ति में देरी

2.4 चालू व्यापार अवधारणा

इस अवधारणा का मानना है कि व्यावसायिक इकाई अपनी गतिविधियों को असीमित समय तक चलाती रहेगी। इसका अर्थ है कि प्रत्येक व्यवसाय इकाई के जीवन में निरंतरता है, इसलिए निकट भविष्य में इसका समापन नहीं होगा। यह लेखांकन की एक महत्वपूर्ण अवधारणा है क्योंकि इसी के आधार पर स्थिति विवरण में सम्पत्तियों के मूल्य को दिखाया जाता है। उदाहरण के लिए माना कि एक कम्पनी एक संयन्त्र एवं मशीनरी ₹ 1,00,000 में खरीदती है जिसका जीवन काल 10 वर्ष का है। इस अवधारणा के अनुसार कुछ राशि को प्रतिवर्ष खर्च के रूप में दिखाया जाएगा, जबकि शेष को एक सम्पत्ति के रूप में। अतः हम कह सकते हैं कि यदि किसी मद पर कोई राशि खर्च की जाती है जिसका व्यवसाय में कई वर्षों तक उपयोग होगा तो इस राशि को उस वर्ष की आगम में से समायोजित करना तर्कसंगत नहीं होगा जिस वर्ष में इसका क्रय किया गया है। इसके मूल्य के एक भाग को ही उस वर्ष व्यय के रूप में दिखाया जाएगा जिस वर्ष इसको क्रय किया गया है तथा शेष को सम्पत्ति में दिखाया जाएगा।

महत्व

निम्नलिखित बिन्दु चालू व्यापार अवधारणा के महत्व को दर्शाते हैं :

- इस अवधारणा की सहायता से वित्तीय विवरण तैयार किए जाते हैं।
- इस अवधारणा के आधार पर स्थायी सम्पत्तियों पर अवक्षयण लगाया जाता है।
- इससे निवेशकों को बड़ी सहायता मिलती है क्योंकि यह उन्हें विश्वास दिलाता है कि उनको उनके निवेश पर आय प्राप्त होती रहेगी।

- इस अवधारणा के न होने पर स्थायी सम्पत्तियों की लागत को उनके क्रय के वर्ष में व्यय माना जाएगा।
- व्यवसाय का आकलन भविष्य में उसकी लाभ अर्जन क्षमता से किया जाता है।

पाठगत प्रश्न 2.3

कोष्टक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द का चयन कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

i. चालू व्यापार अवधारणा यह बताती है कि प्रत्येक व्यापार अपने कार्यकलापों को .... तक चलाता रहेगा। (निश्चित काल, अनिश्चित काल)

ii. स्थायी संपत्तियों को उनके ..... पर दर्शाया जाता है (लागत मूल्य, बाजार मूल्य)

iii. यह अवधारणा कि व्यापारिक संस्थान को निकट भविष्य में बन्द नहीं किया जाएगा ..... कहलाता है। (चालू व्यापार अवधारणा, मुद्रा माप अवधारणा)

iv. चालू व्यापार अवधारणा के आधार पर एक व्यवसाय अपना ..... तैयार करता है। (वित्तीय विवरण, बैंक विवरण, रोकड़ विवरण)

v. ..... अवधारणा का मानना है कि व्यवसाय का निकट भविष्य में समापन नहीं होगा। (चालू व्यापार अवधारणा, व्यावसायिक इकाई अवधारणा)

2.5 लेखांकन अवधि अवधारणा

लेखा पुस्तकों में लेन-देनों का लेखा इस मान्यता पर किया जाता है कि उन लेन-देनों के फलस्वरूप एक निश्चित अवधि के लिए लाभ का निर्धारण किया जाना है। इसे ही लेखा अवधि अवधारणा कहते हैं। इस अवधारणा के अनुसार स्थिति विवरण एवं लाभ हानि खाते को नियमित रूप से निश्चित अवधि की समाप्ति पर बनाना चाहिए। यहाँ इसके कई उद्देश्य हैं जैसे कि लाभ का निर्धारण, वित्तीय स्थिति का निर्धारण, कर की गणना आदि।

लेखा अवधि अवधारणा में व्यापार के अनिश्चित जीवन को कई भागों में बांट दिया जाता है। इन भागों को लेखांकन काल/लेखा अवधि कहा जाता है। यह एक वर्ष, छः महीने, तीन महीने, एक माह आदि हो सकते हैं। सामान्यता एक लेखा अवधि एक वर्ष की ली जाती है जो कि एक कलेण्डर वर्ष अथवा वित्तीय वर्ष हो सकती है।

*वर्ष का प्रारम्भ यदि **1** जनवरी से होता है तथा **31** दिसम्बर को समाप्त होता है तो यह केलेण्डर वर्ष कहलाता है। वर्ष यदि **1** अप्रैल को प्रारम्भ होता है तथा अगले वर्ष में **31** मार्च को समाप्त होता है तो वित्तीय वर्ष कहलाता है।*

टिप्पणी

टिप्पणी

लेखा अवधि अवधारणा के अनुसार लेखा-पुस्तकों में लेन-देनों का लेखा एक निश्चित अवधि को ध्यान में रखकर किया जाता है। अतः इस अवधि में खरीदी बेची गई वस्तुओं का भुगतान, किराया वेतन आदि का लेखा उस अवधि के लिए ही किया जाता है।

महत्व

- यह व्यवसाय की भविष्य की संभावनाओं के पूर्वानुमान में सहायक होता है।
- यह व्यवसाय की एक निश्चित समय अवधि की आय पर कर निर्धारण में सहायक होता है।
- यह एक निश्चित अवधि के लिए व्यवसाय के निष्पादन मूल्याँकन एवं विश्लेषण करने में बैंक, वित्तीय संस्थान, लेनदार आदि की सहायता करता है।
- यह व्यावसायिक इकाइयों को अपनी आय को नियमित अन्तराल पर लाभांश रूप में वितरण करने में सहायता प्रदान करता है।

पाठगत प्रश्न 2.4

रिक्त स्थानों की उपयुक्त शब्द भरकर पूर्ति कीजिए :

i. एक निश्चित अवधि को ध्यान में रखते हुए लेखा पुस्तकों में लेखा करना .... अवधारणा कहलाता है।

ii. भारत में सामान्य रूप से मानी गई लेखा अवधि ..... है।

iii. लेखा अवधि की अवधारणा के अनुसार आगम एवं व्यय एक ..... अवधि से सम्बन्धित होते हैं।

iv. जब लेखा वर्ष 1 जनवरी को प्रारम्भ होता है तथा 31 दिसम्बर को समाप्त होता है तो यह ..... कहलाता है।

v. लेखा वर्ष 1 अप्रैल को प्रारम्भ हाता है तथा अगले वर्ष की 31 मार्च को समाप्त होता है तो यह ..... कहलाता है।

2.6 लेखांकन लागत अवधारणा

लेखांकन लागत अवधारणा के अनुसार सभी सम्पत्तियों का लेखा बहियों में उनके क्रय मूल्य पर लेखांकन किया जाता है न कि उनके बाजार मूल्य पर। क्रय मूल्य में उसका अधिग्रहण मूल्य, परिवहन एवं स्थापित करने की लागत सम्मिलित होती है। इसका अर्थ हुआ कि स्थायी सम्पत्तियाँ जैसे कि भवन, संयंत्र एवं मशीनें, फर्नीचर आदि को लेखा पुस्तकों में उन मूल्यों पर लिखा जाता है जो कि उनको प्राप्त करने के लिए

टिप्पणी

भुगतान किया गया है। उदाहरण के लिए माना XYZ लि. ने जूते बनाने की एक मशीन ₹ 5,00,000 में खरीदी, ₹ 1,000 मशीन को कारखाने तक लाने पर व्यय किए गए। इसके अतिरिक्त ₹ 2,000 इसकी स्थापना पर व्यय किए। कुल राशि जिस पर मशीन का लेखा पुस्तकों में अभिलेखन किया जाएगा वह इन सभी मदों का कुल योग होगा जो कि ₹ 5,03,000 है। यह लागत ऐतिहासिक लागत भी कहलाती है। माना कि अब इसका बाजार मूल्य ₹ 90,000 है तो इसे इस मूल्य पर नहीं दिखाया जाएगा। इसे और स्पष्ट कर सकते हैं कि लागत से अभिप्रायः नई सम्पत्ति के लिए उसकी मूल अथवा उसको प्राप्त करने की लागत है तथा उपयोग की गई सम्पत्तियों की लागत का अर्थ है मूल लागत घटा अवक्षयण। लागत अवधारणा को ऐतिहासिक लागत अवधारणा भी कहते हैं। यह लागत अवधारणा का प्रभाव है कि यदि व्यावसायिक इकाई संपत्ति को प्राप्त करने के लिए कोई भी भुगतान नहीं करती है तो यह मद लेखा पुस्तकों में नहीं दर्शाया जायगा। अतः ख्याति को बहियों में तभी दर्शाया जाता है, जब व्यवसाय ने इस अदृश्य सम्पत्ति को मूल्य देकर खरीदा है।

महत्व

- इस अवधारणा के अनुसार संपत्ति को उसके क्रय मूल्य पर दिखाया जाता है जिसको सहायक प्रलेखों से प्रमाणित किया जा सकता है।
- इससे स्थायी सम्पत्तियों पर अवक्षयण की गणना करने में सहायता मिलती है।
- लागत अवधारणा के परिणामस्वरूप सम्पत्ति को लेखा बहियों में नहीं दिखाया जाएगा यदि व्यवसाय ने इसको प्राप्त करने के लिए कोई भुगतान नहीं किया है।

पाठगत प्रश्न 2.5

रिक्त स्थानों की उचित शब्द भरकर पूर्ति कीजिए :

i. लागत अवधारणा के अनुसार सभी स्थायी सम्पत्तियों को लेखा पुस्तकों में उनके .... मूल्य पर लिखा जाता है।

ii. स्थायी सम्पत्तियों के अभिलेखन के लिए ऐतिहासिक लागत को अपनाने का मुख्य उद्देश्य है कि सम्पतियों की लागत की ..... प्रलेखों से सरलता से जांच की जा सकती है।

iii. लागत अवधारणा व्यवसाय की ..... को नहीं दर्शाती है।

iv. लागत अवधारणा को ..... अवधारणा भी कहते हैं।

टिप्पणी

2.7 द्विपक्षीय अवधारणा

द्विपक्षीय अवधारणा लेखांकन का आधारभूत एवं मूलभूत सिद्धान्त है। यह व्यवसायिक लेन-देनों को लेखांकन पुस्तकों में अभिलेखित करने का आधार प्रदान करता है। इस अवधारणा के अनुसार व्यवसाय के प्रत्येक लेन-देन का प्रभाव दो स्थानों पर पड़ता है अर्थात् यह दो खातों को एक-दूसरे के विपरीत प्रभावित करता है। इसीलिए लेन-देनों का दो स्थानों पर अभिलेखन करना होगा। उदाहरण के लिए माना नकद माल खरीदा। इसके दो पक्ष हैं : (i) नकद भुगतान, (ii) माल को प्राप्त करना। इन दो पक्षों का अभिलेखन किया जाना है।

द्विपक्षीय अवधारणा को मूलभूत लेखांकन समीकरण के रूप में प्रर्दशित किया जा सकता है।

परिसंपत्तियाँ = देयताएँ + पूँजी

उपर्युक्त लेखा सभीकरण के अनुसार व्यवसाय की परिसंपत्तियों का मूल्य सदैव स्वामी एवं बाह्य लेनदारों की दावे की राशि के बराबर होता है। यह दावा पूँजी अथवा स्वामित्व पूँजी के नाम से जाना जाता है तथा बाह्य लोगों की दावेदारी को देयताएँ अथवा लेनदारों की पूँजी कहते हैं।

द्विपक्षीय अवधारणा लेन-देन के दो पक्षों की पहचान करने में सहायक होती है जो लेखा पुस्तकों में लेन-देन के अभिलेखन में नियमों को प्रयोग करने में सहायक होता है। द्विपक्षीय अवधारणा का प्रभाव है कि प्रत्येक लेन-देन का सम्पत्तियों एवं देयताओं पर समान प्रभाव इस प्रकार से पड़ता है कि कुल सम्पत्तियाँ सदा कुल देयताओं के बराबर होते है।

आइए कुछ और व्यावसायिक लेन-देनों का उसके द्विपक्षीय रूप में विश्लेषण करेः

1. व्यवसाय के स्वामी ने पूँजी लगाई।
   (i) रोकड़ की प्राप्ति
   (ii) पूँजी में वृद्धि (स्वामीगत पूँजी)

2. मशीन खरीदी भुगतान चैक से किया
   लेन-देन के दो पक्ष हैं :
   (i) बैंक शेष में कमी
   (ii) मशीन का स्वामित्व

3. नकद माल बेचा
   दो पक्ष है :
   (i) रोकड़ प्राप्त हुई
   (ii) ग्राहक को माल की सुपुर्दगी की गई

टिप्पणी

4. मकान मालिक को किराए का भुगतान किया
   दो पक्ष है :
   (i) रोकड़ का भुगतान
   (ii) किराया (व्यय किया)

लेन-देन के दोनों पक्षों के पता लग जाने के पश्चात् लेखांकन के नियमों को लागू करना तथा लेखा पुस्तकों में उचित अभिलेखन करना सरल हो जाता है।

द्विपक्षीय अवधारणा का अर्थ है कि प्रत्येक लेन-देन का सम्पत्तियों एवं देयताओं पर इस प्रकार से समान प्रभाव पड़ता है कि व्यवसाय की कुल परिसम्पत्तियाँ सदा उसकी देयताओं के बराबर होंगी।

महत्व

- यह अवधारणा लेखाकारों को अशुद्धियों को पहचानने में सहायक होती है।
- यह लेखाकारों को प्रत्येक प्रविष्टि की खतौनी, प्रभावित दोनों खातों में एक-दूसरे के विरुद्ध पक्षों में करने के लिए प्रोत्साहित करता है

पाठगत प्रश्न 2.6

निम्न लेन-देनों के दोनों पक्षों (प्रभाव) को लिखिए :

क्र.सं.	*लेन–देन*	*प्रथम पक्ष*	*द्वितीय पक्ष*
(i)	स्वामी व्यवसाय में रोकड़ लाता है		
(ii)	नकद माल खरीदा		
(iii)	नकद माल बेचा		
(iv)	फर्नीचर नकद खरीदा		
(v)	शर्मा से रोकड़ प्राप्त हुआ		
(vi)	रमा से मशीन उधार खरीदी		
(vii)	रमा को भुगतान किया		
(viii)	वेतन का भुगतान किया		
(ix)	किराए का भुगतान किया		
(x)	किराया प्राप्त हुआ		

2.8 वसूली अवधारणा

इस अवधारणा के अनुसार किसी भी व्यावसायिक लेन-देन से आगम को लेखांकन अभिलेखों में उसके वसूल हो जाने पर ही सम्मिलित किया जाना चाहिए। वसूली शब्द का अर्थ है राशि को प्राप्त करने का कानूनी अधिकार प्राप्त हो जाना। माल का विक्रय वसूली है, आदेश प्राप्त करना वसूली नहीं है।

दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं :

आगम की वसूली मानी जाएगी जबकि वस्तुओं अथवा सेवाओं की बिक्री या फिर दोनों पर या तो नकद राशि प्राप्त हो चुकी है अथवा नकद प्राप्ति का अधिकार प्राप्त हो चुका है।

आइए नीचे दिए गए उदाहरणों का अध्ययन करें :

(i) एन.पी. ज्वैलर्स को ₹ 5,00,000 के मूल्य के सोने के आभूषणों की आपूर्ति करने का आदेश प्राप्त हुआ। उन्होंने ₹ 2,00,000 के मूल्य के आभूषणों की आपूर्ति 31 दिसम्बर, 2013 तक कर दी और शेष की आपूर्ति जनवरी 2014 में की।

(ii) बंसल ने 2013 में ₹ 1,00,000 का माल नकद बेचा तथा माल की सुपुर्दगी इसी वर्ष में की।

(iii) अक्षय ने वर्ष समाप्ति 31 दिसम्बर, 2013 में ₹ 50,000 का माल उधार बेचा। माल की सुपुर्दगी 2013 में की गई लेकिन भुगतान मार्च 2014 में प्राप्त हुआ।

आइए अब वर्ष समाप्ति 31 दिसम्बर, 2013 के लिए सही आगम वसूली का निर्धारण करने के लिए उपरोक्त उदाहरणों का विश्लेषण करें।

(i) एन.पी. ज्वैलर्स की वर्ष 2013 की आगम राशि ₹ 2,00,000 है। मात्र आदेश प्राप्त करना आगम नहीं माना जाता जब तक कि माल की सुपुर्दगी न की गई हो।

(ii) वर्ष 2013 के लिए बंसल की आगम राशि ₹ 1,00,000 है क्योंकि माल की वर्ष 2013 में सुपर्दगी की गई। रोकड़ भी उसी वर्ष में प्राप्त हो गई।

(iii) अक्षय का वर्ष 2013 का आगम ₹ 50,000 है क्योंकि उपभोक्ता को वर्ष 2013 में माल की सुपर्दगी की गई। उपर्युक्त उदाहरणों में आगम की वसूली उस समय मानी जाएगी जबकि माल ग्राहक को सौंप दिया गया हो।

वसूली अवधारणा के अनुसार आगम की वसूली उस समय मानी जाएगी जबकि वस्तुओं अथवा सेवाओं की वास्तव में सुपुर्दगी की गई है।

संक्षेप में कह सकते हैं कि वसूली वस्तुओं अथवा सेवाओं के नकद अथवा उधार बेच देने के समय होती है। इसका अभिप्रायः प्राप्य के रूप में सम्पत्तियों के आन्तरिक प्रवाह से है।

टिप्पणी

महत्व

- यह लेखांकन सूचना को अधिक उद्देश्यपूर्ण बनाने में सहायक है।
- इसके अनुसार वस्तुओं के क्रेता को सुपुर्द करने पर ही अभिलेखन करना चाहिए।

पाठगत प्रश्न 2.7

*वर्ष समाप्ति **31** दिसम्बर, **2006** के लिए आगम वसूली राशि का निर्धारण कीजिए।*

i. ₹ 20,00,000 के माल की आपूर्ति के लिए वर्ष 2006 में आदेश प्राप्त हुआ। लेकिन 2006 मे केवल ₹ 10,00,000 के माल की आपूर्ति की गई है।

ii. आगम राशि क्या होगी? यदि 2006 में ₹ 6,00,000 नकद प्राप्त हुए जबकि शेष ₹ 4,00,000 2007 में प्राप्त हुए।

iii. आगम राशि क्या होगी यदि माल उधार प्राप्त हुआ है जबकि ₹ 20,00,000 के माल की 2006 में आपूर्ति की गई।

iv. आगम राशि क्या होगी यदि माल उधार बेचा है तथा ₹ 15,00,000 का भुगतान वर्ष 2007 में प्राप्त हुआ है, जबकि ₹ 20,00,000 के सारे माल की आपूर्ति वर्ष 2006 में कर दी गई थी।

2.9 उपार्जन अवधारणा

उपार्जन से अभिप्रायः किसी चीज की देनदारी का बन जाना है विशेष रूप से वह राशि जिसका भुगतान अथवा प्राप्ति लेखा वर्ष के अन्त में होनी है। इसका अर्थ हुआ कि आगम तभी मानी जाएगी जबकि निश्चित हो जाए भले ही नकद प्राप्ति हुई है या नहीं। इसी प्रकार से व्यय को तभी माना जाएगा जबकि उनकी देयता बन जाए। फिर भले ही उसका भुगतान किया गया है अथवा नहीं। दोनों ही लेन-देनों का उस लेखा वर्ष में अभिलेखन होगा जिससे वह सम्बन्धित है। इसीलिए उपार्जन अवधारणा नकद की वास्तविक प्राप्ति तथा प्राप्ति के अधिकार तथा व्ययों के वास्तविक नकद भुगतान तथा भुगतान के दायित्व में अन्तर करता है।

लेखांकन में उपार्जन अवधारणा के अन्तर्गत यह माना जाता है कि आगम की वसूली सेवा या वस्तुओं के विक्रय के समय होगी न कि जब रोकड की प्राप्ति होती है। उदाहरण के लिए माना एक फर्म ने ₹ 55,000 का माल 25 मार्च, 2014 को बेचा लेकिन भुगतान 10 अप्रैल, 2014 तक प्राप्त नहीं हुआ। राशि देय है तथा इसका फर्म को बिक्री की तिथि अर्थात् 25 मार्च, 2014 को भुगतान किया जाना है। इसको वर्ष समाप्ति 31 मार्च, 2014 की आगम में सम्मिलित किया जाना चाहिए। इसी प्रकार व्ययों की पहचान

टिप्पणी

सेवाओं की प्राप्ति के समय की जाती है न कि जब इन सेवाओं का वास्तविक भुगतान किया जाता है। उदाहरण के लिए माना फर्म ने ₹ 20,000 रु. की लागत का माल 29 मार्च, 2014 को प्राप्त किया लेकिन भुगतान 2 अप्रैल, 2014 को किया गया। उपार्जन अवधारणा के अुनसार व्ययों का अभिलेखन वर्ष समाप्ति 31 मार्च, 2014 के लिए किया जाना चाहिए जबकि 31 मार्च, 2014 तक कोई भुगतान प्राप्त नहीं हुआ है। यद्यपि सेवाएँ प्राप्त की जा चुकी हैं तथा जिस व्यक्ति का भुगतान किया जाना है उसे लेनदार दिखाया गया है।

संक्षेप में, उपार्जन अवधारणा की मांग है कि आगम की पहचान उस समय की जाती है जबकि उसकी वसूली हो चुकी हो और व्ययों की पहचान उस समय की जाती है जबकि वह देय हों तथा उनका भुगतान किया जाना हो न कि जब भुगतान प्राप्त होने पर अथवा भुगतान करने पर।

महत्व

इससे एक समय विशेष के वास्तविक व्यय एवं वास्तविक आय को जान सकते हैं।

- इससे व्यवसाय के लाभ का निर्धारण करने में सहायता मिलती है।

पाठगत प्रश्न 2.8

उपयुक्त शब्दों से भरकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

i. उपार्जन अवधारणा ..... के निर्धारण से सम्बन्धित है।

ii. ₹ 50,000 का माल 25 मार्च, 2014 को बेचा गया लेकिन भुगतान 10 अप्रैल, 2014 को प्राप्त हुआ। यह वर्ष समाप्ति ..... का आगम माना जाएगा।

iii. उपार्जन अवधारणा के अनुसार आगम को तब माना जाता है जबकि ..... तथा व्ययों को तब माना जाता है जबकि वह ..... हो जाएँ।

2.10 मिलान अवधारणा

मिलान अवधारणा के अनुसार आगम के अर्जन के लिए जो आगम एंव व्यय किए जाएँ वह एक ही लेखा वर्ष से सम्बन्धित होने चाहिएँ। अतः एक बार यदि आगम की प्राप्ति हो गई है तो अगला कदम उसको सम्बन्धित लेखा वर्ष में आबंटित करना है और यह उपार्जन अवधारणा के आधार पर किया जा सकता है।

आइए एक व्यवसाय के दिसम्बर 2014 के निम्नलिखित लेन–देनों का अध्ययन करें।

टिप्पणी

i. बिक्री : नकद ₹ 2,000 एवं उधार ₹ 1,000

ii. वेतन भुगतान ₹ 350 किया

iii. कमीशन का भुगतान ₹ 150 किया

iv. ब्याज प्राप्त ₹ 50 किया

v. ₹ 140 किराया प्राप्त किया जिसमें से ₹ 40 2015 के लिए हैं।

vi. भाड़े का भुगतान ₹ 20 किया

vii. पोस्टेज ₹ 30

viii. 200 रु. किराए के प्राप्त किए जिसमें से ₹ 50 2013 के लिए प्राप्त हुए।

ix. वर्ष में नकद माल ₹ 1,500 एवं उधार ₹ 500 खरीदा।

x. मशीन पर अवक्षयण ₹ 200

आइए अब इन लेन–देनों को व्यय एवं आगम शीर्षकों के अन्तर्गत लिखे :

व्यय		*राशि (₹)*	*आगम*		*राशि (₹)*
1. वेतन		350	1. बिक्री		
2. कमीशन		150	नकद	2,000	
3. भाड़ा		20	उधार	1,000	3,000
4. पोस्टेज		30	2. ब्याज प्राप्त हुआ		50
5. किराया दिया	200		3. किराया प्राप्त हुआ	140	
घटा 2013 के लिए	50	150	*घटा* 2015 के लिए	40	100
6. माल क्रय किया					
रोकड़	1,500				
उधार	500	2,000			
7. मशीन पर अवक्षयण		200			
कुल योग		**2,900**	**कुल योग**		**3,150**

उपर्युक्त उदाहरण में व्ययों का मिलान आगम से किया गया है अर्थात् आगम ₹ 3,150 व्यय ₹ 2,900। इस मिलान के परिणामस्वरूप ₹ 250 का लाभ निकला। यदि आगम व्ययों से अधिक है तो यह लाभ कहलाता है और यदि व्यय आगम से अधिक हैं तो यह हानि कहलाएगी। ठीक इसी प्रकार मिलान अवधारणा में किया गया है।

टिप्पणी

अतः हम कह सकते हैं कि मिलान अवधारणा का अर्थ है कि किसी एक लेखा वर्ष में सभी अर्जित आय भले ही वह उस वर्ष में प्राप्त हुई है अथवा नहीं एवं सभी लागतें, चाहे उसका उस वर्ष में भुगतान कर दिया गया है अथवा नहीं, को उस वर्ष के लाभ–हानि निर्धारण के लिए लिया जाएगा।

महत्व

- यह दिशा प्रदान करता है कि किसी अवधि विशेष के सही लाभ-हानि निर्धारण के लिए व्ययों का आगम से किस प्रकार से मिलान किया जाए।
- यह निवेशक/अंशधारियों को व्यवसाय के सही लाभ अथवा हानि को जानने में सहायक होता है।

पाठगत प्रश्न 2.9

उचित शब्द भरकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

i. एक अवधि के दौरान अर्जित ..... के साथ व्ययों का मिलान किया जाता है।

ii. नकद माल का विक्रय ..... का एक उदाहरण है।

iii. वेतन भुगतान ..... का एक उदाहरण है।

iv. ..... की ..... पर अधिकता आय है।

v. ..... अवधारणा का मानना है कि आय अर्जन के लिऐ आगम और व्यय एक ही लेखा अवधि से संबंधित होने चाहिएँ।

vi. ..... अवधारणा का मानना है कि किसी विशेष अवधि का सही लाभ अथवा हानि ज्ञात करने के लिए व्ययों का आगम से कैसे मिलान करना चाहिए।

आपने क्या सीखा

- लेखांकन अवधारणाएँ वह मूलभूत मान्यताएँ हैं जो वास्तविक व्यावसायिक लेन-देनों के अभिलेखन का आधार होती हैं।
- कुछ महत्वपूर्ण लेखांकन अवधारणाएँ हैं व्यावसायिक इकाई, मुद्रा मापन, चालू व्यापार, लेखांकन अवधि, लागत अवधारणा, द्विपक्षीय अवधारणा, वसूली अवधारणा, उपार्जन अवधारणा एवं मिलान अवधारणा।
- व्यावसायिक इकाई अवधारणा में यह माना जाता है कि लेखांकन के उद्देश्य के लिए व्यावसायिक इकाई एवं इसका स्वामी दो अलग-अलग इकाइयाँ है।

टिप्पणी

- मुद्रा माप अवधारणा यह मानती है कि सभी व्यावसायिक लेन-देनों का मुद्रा रूप में लेखा पुस्तकों में लेखांकन करना चाहिए।
- चालू व्यापार अवधारणा के अनुसार व्यावसायिक इकाई अपनी क्रियाओं को अनिश्चित समय तक करती रहेगी।
- लेखा अवधि अवधारणा के अनुसार लेखा पुस्तकों में सभी व्यावसायिक लेन-देन इस मान्यता पर लिखे जाते हैं कि लेन-देनों के लाभ का निर्धारण एक विशेष अवधि के लिए किया जाएगा।
- लेखांकन लागत अवधारणा का यह मानना है कि सभी सम्पत्तियों का लेखा पुस्तकों में अभिलेखन उनके लागत मूल्य पर किया जाता है।
- द्विपक्षीय अवधारणा के अनुसार प्रत्येक लेन-देन का दो पहलुओं पर प्रभाव पड़ता है।
- वसूली अवधारणा के अनुसार किसी भी व्यावसायिक लेन-देन से प्राप्त आगम को लेखांकन अभिलेखों में तभी सम्मिलित करना चाहिए जब उसकी वसूली हो जाए।
- मिलान अवधारणा के अनुसार आय अर्जन के लिए आगम एवं व्यय एक ही लेखा अवधि से सम्बन्धित होने चाहिएँ।

पाठान्त प्रश्न

1. चालू व्यापार अवधारणा के अर्थ एवं महत्व को समझाइए।
2. व्यावसायिक इकाई अवधारणा से आप क्या समझते हैं?
3. मुद्रा माप अवधारणा के अर्थ एवं महत्व को बताइए।
4. निम्नलिखित को संक्षेप में समझाइए :

   (क) लागत अवधारणा

   (ख) उपार्जन अवधारणा

   (ग) मिलान अवधारणा

   (घ) लेखांकन अवधि अवधारणा

5. लेखांकन अवधारणा से आप क्या समझते हैं? किन्हीं चार अवधारणाओं को समझाइए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

2.1 (i) नियम (ii) समरूपता एवं अनुरूपता
(iii) व्यावसायिक इकाई अवधारणा (iv) आहरण

2.2 (i) × (ii) √ (iii) √ (iv) √ (v) ×

2.3 (i) अनिश्चित समय अवधि के लिए (ii) लागत मूल्य
(iii) चालू व्यापार अवधारणा (iv) वित्तीय विवरण (v) चालू व्यापार

2.4 (i) लेखांकन अवधि (ii) एक वर्ष (iii) विशिष्ट
(iv) कैलेंडर वर्ष (v) वित्तीय वर्ष

2.5 (i) क्रय (ii) सहायक
(iii) सत्य, शुद्ध पूँजी (iv) ऐतिहासिक लागत

2.6 (i) स्वामित्व पूँजी, नकद (ii) माल प्राप्त किया, नकद
(iii) नकद प्राप्त किया, माल बेचा (iv) फर्नीचर, नकद
(v) नकद, शर्मा (vi) मशीन, रमा (vii) रमा, नकद
(viii) वेतन, नकद (ix) किराया, नकद (x) नकद, किराया

2.7 (i) ₹ 10,00,000 (ii) ₹10,00,000
(iii) ₹ 20,00,000 (iv) ₹ 1,00,000

2.8 (i) आय (ii) 31 मार्च, 2014 (iii) वसूली हुई, देय

2.9 (i) आगम (ii) आगम (iii) व्यय (iv) आगम, व्यय
(v) मिलान (vi) मिलान

क्रियाकलाप

हमारे देश में व्यावसायिक इकाइयाँ प्रतिवर्ष समान लेखा अवधि को नहीं मान रही है। विभिन्न स्रोतों से जानकारी जुटाएँ एवं हमारे देश में प्रचलित विभिन्न लेखा अवधियों की सूची तैयार करें। एक उदाहरण नीचे दिया गया है :

1. वर्ष समाप्ति 31 मार्च (वित्तीय वर्ष)
2. .....
3. .....
4. .....